डॉ. परशुराम विरही

लोकरंजनी

प्रकाशक

मध्यप्रदेश लेखक संघ

भोपाल

लोक रंजनी

ससम्मान भेंट
[illegible]
15-7-2015
देवीपुरम कॉलोनी
शिवपुरी म.प्र. 473551

•

डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही'

•

प्रकाशक

म. प्र. लेखक संघ, भोपाल

•

प्रथम संस्करण : 2012–13

•

मुद्रक एवं शब्द संयोजन

रवि प्रिंटिंग प्रेस, कोलारस

•

दो सौ प्रतियाँ

•

© सर्वाधिकार लेखक के आधीन

मूल्य : 150/–

काँ किते है

- भूमिका 1
- कानिया
  दोई दीन सें गये पांड़े 5
- संस्मरण
  मेरे दोस्त कर्नल गुरुबख्शसिंह ढिल्लन 37
- रूपक
  जब गोरख किरपा करी 57
- कविता
  स्वागत : भावी पैरी 77
- जीवनी
  जिद्दू कृष्णमूर्ति : एक चिनार 82
- संगीत रूपक
  महात्मा 91
- पर्व लेख
  दिवारी कौ दिया 96
- यात्रा वृत्त
  घुमक्कड़ी पाथर बाग की 103
- रिपोर्ताज
  लोक भाषा-साहित्य पै वैश्वीकरण कौ प्रभाव 110

बटुक चतुर्वेदी
(प्रदेशाध्यक्ष)
मध्यप्रदेश लेखक संघ
(अधिमान्य पत्रकार)

14/8, परी बाजार
शहजहांनाबाद,
भोपाल - 462001
दूरभाष : (0755) 544802

पूर्व कथन

बुन्देली में अपने तरह की संभवतः यह प्रथम कृति है, जिसमें किसी एक लेखक ने साहित्य की विविध विधाओं में अपनी लेखकीय क्षमता प्रदर्शित की है। डॉ. विरही की लेखनी प्रौढ़ एवं प्रांजल है। लगभग बीस ग्रंथ–रत्न उन्होंने हिन्दी जगत को दिये हैं। उनकी अपनी मूल भाषा बुन्देली में उनकी यह प्रथम कृति है। यद्यपि बुन्देलखण्ड की संस्कृति और इतिहास को सहेजे हुए इसके पूर्व डॉ. विरही की चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, परन्तु वे सब खड़ी बोली हिन्दी में हैं। डॉ. विरही अपनी माटी की सुगंध से बिद्ध होकर उसकी ओर आकर्षित हुए हैं–यह संतोष और प्रसन्नता की बात है।

स्वनामधन्य साहित्यकार प्रायः अपने मूल परिवेश से कट जाते हैं। परन्तु लोक रंजनी की भाषा पढ़कर यह लगता नहीं है कि डॉ. विरही ने बुन्देली में प्रथम बार लेखन किया है। पुस्तक में साहित्य की विविध विधाओं को बुन्देली भाषा में लिखा गया है। इसमें शैलीगत वैशिष्ट्य तो है ही, कथ्य में भी ताजगी है। ताजगी इसलिए कि पुस्तक में संकलित सामग्री में विशदता है, सूक्ष्मता है और निजीकरण है। "दोई दीन से गय पाँड़े" बुन्देली की अपनी लोकोक्ति है, जो कहानी के शीर्षकीकरण का सटीक व आकर्षक आधार बनी है। इस कहानी में आदर्श और यथार्थ का सुन्दर समन्वय हुआ है साथ ही बुन्देली संस्कृति के चित्र भी उभरे हैं। कर्नल ढिल्लन पर लिखा गया संस्मरण लाखों बुन्देलखण्ड वासियों को उनकी यादों से जोड़ेगा। बुन्देलखण्ड में अब भी बुजुर्गों के मुंह से यदा–कदा 'जाग मछन्दर गोरख आया' जैसा अबूझ उदघोष सुनाई देता है। पर इसका रहस्य– रूपक– 'जब गोरख किरपा करी' खोलता है। 'लोकभाषा और लोकसाहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव' रिपोर्ताज के रूप में अद्भुत है। हिन्दी की रिपोर्ताज, यात्रा वृतांत और जीवनी विधाएँ कैसी होती हैं–उन्हें बुन्देली में लिखकर बुन्देली भाषियों का परिचय उनसे कराया है। डॉ. विरही का व्यक्तित्व बहुआयामी है और यही व्यक्तित्व उनकी कविता सहित अन्य विधाओं में स्पष्ट रूप से उभरा है।

प्रस्तुत कृति बुन्देली भाषियों का कण्ठहार तो बनेगी ही, अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के लेखकों को भी यह प्रेरणाप्रद होगी। कृति के लेखक को कोटिशः साधुवाद।

(बटुक चतुर्वेदी)

बुन्देलखण्ड की रंजनी–लोकरंजनी

अपने–अपने क्षेत्र की भाषाओं में पैले सें भोत कछू लिखो जा रव। पै, जित्तो पद्य में लिखो गव, उत्तो अबे गद्य में नईं लिखो जा रव। ई पोथी खों रचबे वारे डॉ. विरहीजू को नाँव देस भर में है। जे भोतइ बड़े जनवा हैं उर इनने केउ पोथीं लिखीं। अपनी बुन्देली माटी में रचे–बसे विरहीजू ने जब जो देखो कि ई भासा में गद्य की बन्न–बन्न विधाओं में लिखबे को टोटो है सो उननें ई कुदाऊँ काम करबे की सोची उर हो गइ जा पोथी तैयार। ई पोथी के पैलां कैलाश मड़वइयाजू ने बुन्देली गद्य की तीन पोथीं–बांके बोल बुन्देली के, मीठे बोल बुन्देली के उर नीके बोल बुन्देली के सम्पादित कर निकारीं तीं। इन पोथियन में बुन्देली के केउ जनन के उम्दा–उम्दा लेख छपे ते। पै ई पोथी में विरहीजू के सिवाय और कोउ के लेख नइयां। जासें ई पोथी को अपनो महत्त है।

हिन्दी भासा के गद्य में कानियाँ, नाटक, रूपक, घुमक्कड़ी–कथा, संस्मरण, रिपोर्ताज व्यंग्य, उर केउ तरा के निबंध लिखे जा रय–सैकरन। ई पोथी में विरहीजू ने बुन्देली में कानियाँ, संस्मरण, घुमक्कड़ी–कथा, रूपक, रिपोर्ताज लिखे हैं, संगे–संगे कविता प्रेमियों के लानें कविता सोउ दे दई। ई में एकाद व्यंग्य उर एकाद रेखाचित्र हो तो, तो उर नोनो लगतो।

ऊसें तो हर जगाँ हरदी को बड़ो महत्त है। पै बुन्देलखण्ड में हरदी को तनक अतकारो महत्त है। ब्याव काज में वर–वधू खों हरदी चड़त, हरदी को उपटनो होत उर जनी मान्सें नेवतारन खों हरदी छपाउतीं। हरदी से भिड़ा जावे के डर सें नेवतार लुकत फिरत। ब्याव होकें जब नई दुलइया आउत सो दई देवता पूजवे में हरदी के हाँते लगवाए जात। मानदान खों टीका हरदी से करो जात। मानें; हरदी खों जिते भौत सुभ मानो जात उतई हरदी स्वास्थ के लानें सोउ अच्छी होत। ऐइ हरदी खों लोक संस्कृत में रंजनी कात। विरहजू ने अपनी पोथी को नाम ऐन घोक कें धरो। लोक की हरदी–बुन्देलखण्ड की हरदी–जोन केउ रूप लँय–बुन्देली गद्य की केउ विधाओं को।

लोक की हरदी, लोकरंजनी मोय तो भौतइ भाइ, मोरी तरां कजंत अपनखों भा जावे।

डॉ. लखन लाल खरे
विभागाध्यक्ष–हिन्दी
शा० श्रीमंत महा० माधवराव सिंधिया
महाविद्यालय कोलारस जिला शिवपुरी
संपर्क– 9425137859

नारी साहित्यकार ... का योगदान

परिचय

पूरा नाम – **डॉ. परशुराम शुक्ल विरही**

जन्मतिथि – 25 मार्च 1929 जन्म स्थान : तालबेहट (ललितपुर)

शिक्षा – पी.एच–डी. (आगरा विश्वविद्यालय में शोधग्रंथ 1960 में प्रस्तुत किया, उपाधि 1962 में मिली)

लेखन का प्रारंभ – सन् 1945 में कविता लेखन से (प्रथम कृति का प्रकाशन सन् 1959 में हुआ)

प्रकाशित ग्रंथ – 1. अनथ के प्राण 2. आधुनिक हिन्दी काव्य में यथार्थवाद 3. आधुनिक कवियों के जीवन दर्शन 4. ओ द्रष्टा मन 5. आदमी का डर 6. अन्तर्यात्रा 7. अमर होते हैं स्वर 8. अपने हिस्से का उजाला 9. जिन्दा शहीद 10. बुन्देलखण्ड की संस्कृति 11. बुन्देली लोकगीत और लोक संस्कृति 12. फ्रॉयड के साथ 13. अपना अपना सच 14. तात्याटोपे बुन्देलखण्ड में 15. संस्कृति के दूत 16. लोक संस्कृति : अवधारणा और तत्व 17. नव जागरण और साहित्य 18. गौतम बुद्ध का बुनियादी चिन्तन 19. दोहा से बोली ग़ज़ल 20. तुलसीदास का चिन्तन 21. लोक रंजिनी 22. फॉन्टामारा (अनुवाद अंग्रेजी से) 23. दि प्रॉफेट (खलील जिब्रान का अनुवाद) 24.संत बेनेदिक्त नियम (अनुवाद अंग्रेजी से)

सम्पादित ग्रंथ – 1. सन् सत्तावन की क्रांति के पत्र 2. रजत नीराजना (ललितपुर जिले के स्वाधीनता सेनानियों के परिचय) 3. यात्रायें और संस्मरण 4. विविधा 5. गांधी शताब्दी 6. बुन्देल वाणी 7. प्रतिबिम्ब

सहयोगी रचनाकार – 1. दस कवि (जीवाजी वि. वि. ग्वालियर में एम.ए. के पाठ्यक्रम में निर्धारित रहा काव्य–संकलन)
2. गाए अनगाये स्वर 3. हम चाकर रघुवीर के 4. मानसरोवर 5. गीतायन 6. बुन्देलवाणी 7. स्वरूपम् 8. हिन्दी कवियों की रुबाइयाँ 9. युगध्वनि 10. महादेवी का काव्य वैभव 11. ज्योति पुरुष 12. सांस्कृतिक एकता और समकालीन हिन्दी साहित्य 13. गूँजते स्वर (दूरदर्शन से प्रसारित कवि–माला)

पुरस्कार और सम्मान – 1. डॉ. शंकरदयाल शर्मा सृजन सम्मान 2. त्रिभुवन यादव पुरस्कार 3. ईसुरी पुरस्कार 4. डॉ. संतोषकुमार तिवारी समीक्षा सम्मान 5. राष्ट्रीय हिन्दी सेवी सहस्त्राब्दी सम्मान 6. पंकिल आलोचना सम्मान 7. अखिल भारतीय साहित्य गौरव सम्मान 8. रामेन्द्र तिवारी सम्मान 9. साहित्य मार्तण्ड सम्मान 10. अखिल भारतीय बुन्देली साहित्य सम्मान 11. अखिल बुन्देली राव बहादुरसिंह सम्मान 12. ठाकुर संभरसिंह सम्मान 13. साहित्य सम्मान 14. साहित्यकार कल्याण सम्मान 15. साहित्य वाचस्पति सम्मान 16. सोम सम्मान 17. साहित्यार्चन सम्मान 18. अक्षर आदित्य सम्मान 19. प्रतिभा सम्मान 20. टैगोर परिषद पुरस्कार तथा अनेक नागरिक अभिनन्दन

विशेष – 1. नवगीत के परिप्रेक्ष्य में डॉ. परशुराम शुक्ल विरही के गीत काव्य का अध्ययन विषय पर बरकतउल्ला वि. वि. भोपाल डॉ. स्मिता मिश्र ने पी.एच–डी. उपाधि प्राप्त की।
2. डॉ. परशुराम शुक्ल विरही के समग्र साहित्य का अनुशीलन विषय पर शोधग्रंथ लिखकर डॉ. विक्रांत शर्मा ने जीवाजी वि.वि. ग्वालियर से पी.एच–डी. उपाधि प्राप्त की।
3. डॉ. विरही की लोक सांस्कृतिक आलोचनात्मक दृष्टि' विषय पर शिलांग विश्वविद्यालय के सेमीनार में डॉ. लखनलाल खरे ने शोध आलेख पढ़ा जो शोध पत्रिका में प्रकाशित हुआ।
4. साहित्य अकादमी नई दिल्ली के परिचय ग्रंथ ' हूज़ हू ऑफ इंडियन राइटर्स ' के एक हस्ताक्षर